Total No. of Pages 44

Price ₹ 8.00

हिन्दी प्रचार समाचार

(स्थापना : 1918)

संस्था के संस्थापक : महात्मा गांधी

जून 2015

शांति के लिए रास्ता नहीं है, शांति ही रास्ता है।
–महात्मा गाँधी

There is no path to peace, peace is the path.
–Mahatma Gandhi

लोकचेतना के विकास में मानवीय मूल्य

डॉ. शशिप्रभा जैन

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वहाँ देश, जहाँ साहित्य नहीं है।।

मानव स्वभावतः क्रियाशील प्राणी है। चुपचाप बैठना उसके लिए संभव नहीं है। इसी प्रवृत्ति के कारण समाज में समय-समय पर क्रोध, घृणा, भय, शांति, उत्साह, करुणा, दया, आशा तथा हर्षोल्लास का प्रदुर्भाव होता है। साहित्यकार इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देकर साहित्य का निर्माण करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बिना समाज के उसका जीवन नहीं और बिना उसके समाज की सत्ता नहीं। समाज का केन्द्र मानव है और साहित्य का केन्द्र भी मानव ही है। मानव समाज के बिना साहित्य का कोई स्थान नहीं। यहाँ यह कहना गलत न होगा कि साहित्य और समाज का प्राण और शरीर की भाँति अटूट संबंध है। साहित्य का जन्म समाज के बिना असंभव है और अच्छे समाज का जन्म बिना साहित्य के असंभव है। समाज को साहित्य से नवजीवन प्राप्त होता है और साहित्य समाज के द्वारा ही गौरवान्वित होता है। प्रत्येक साहित्य अपने युग से प्रभावित होता है। साहित्य किसी भी समाज, देश और राष्ट्र की नींव है। यदि नींव सुदृढ़ होगी तो भवन भी सुदृढ़ होगा साहित्य अजर-अमर है। वह कभी नष्ट नहीं होता।

कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी मानव की बोली या भाषा। जब से मानव ने कहना सीखा तभी से कहानी का भी प्रारंभ हो गया। कहानी मानव जीवन का चित्र होती है। मानव का जीवन-यथार्थ कहानी में परावर्तित होता है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी - निम्नवर्गीय व्यक्ति को अपने विकासार्थ किये जानेवाले यत्नों में उत्पन्न होनेवाले अवरोध तथा संकटों से लेकर उच्चवर्गीय व्यक्तियों के जीवन में विद्यमान, विसंगति, कुण्ठा आदि की बातें सम्मिलित हैं। गहरी जीवन की संकुलता में व्यक्ति का अकेलापन उद्योगरत नारी के विविध पक्षीय संबंध और उनसे उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयाँ, शिक्षितों की निरुद्योग समस्या, राजनीतिक भ्रष्टाचार, परिवारों का विघटन आदि है।

प्रेमचंद युग - किसान जीवन, ग्रामीण एवं शहरीय मध्यवर्गीय जीवन और उनकी सच्चाइयाँ, भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में धीरे-धीरे होनेवाले परिवर्तन आदि उनकी कहानियों की मुख्य विषय वस्तु है। प्रेमचंद आदर्श की ओर से यथार्थोन्मुख हुए सफल कहानीकार हैं। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ आदर्शोन्मुख कहानियाँ हैं। बाद की कहानियाँ यथार्थोन्मुखी कहानियाँ हैं।

कहानियों में अनेक समस्याओं का मार्मिक तथा सांकेतिक चित्रण मिलता है। महानगर की भीड़ में विवशता के बोझ से दबे व्यक्ति की घुटन और छटपटाहट, उच्चवर्गीय महत्वाकांक्षाओं को लेकर संघर्षरत व्यक्तिवादी स्वार्थ पर मध्यवर्गीय व्यक्ति की मनोवृत्ति, परिवार और समाज के बीच चक्कर काटता व्यक्ति, बेरोजगारी से विक्षुब्ध शिक्षित युवावर्ग, कामकाजी नारी के परिवार और आफ़िस के बीच के बनते-बिगड़ते संबंधों की विडम्बनाएँ, राजनैतिक नेताओं के दोनों ही चरित्रों से उत्पन्न हताश और आक्रोश के भाव देखने को मिलते हैं।

नयी कहानी - नयी परिस्थितियाँ, इनके कारण उत्पन्न होनेवाले नये संबंध, नयी समस्याएँ, नये

संघर्ष, नये ढंग का भावबोध – यही आज के युग का यथार्थ है।

आज कहानीकार जीवन के हर वातावरण और बाह्य में स्थित तनाव, द्वंद्व और त्रासद स्थिति के प्रति पाठक को सजग करता है। वह किसी आदर्श या मूल्य के निष्कर्ष पर जाना नहीं चाहता।

आधुनिकता से तात्पर्य अनिवार्य रूप से पुराने विश्वासों और मूल्यों को छोड़ना और नये मूल्यों की खोज है। आज का कहानीकार अपनी अनुभूति के आधार पर आधुनिकता की अपनी युग-चेतना को अभिव्यक्ति देता है।

जीवन-यथार्थ को कई कहानी एक विलक्षण ढंग से प्रस्तुत करती है। नयी कहानी में भोगे हुए यथार्थ को अधिक महत्व दिया जाता है। नयी कहानी के महानगरीय जीवन तथा मध्यवर्गीय जीवन को ज़्यादा प्रभाविकता मिली है। नयी कहानी में मूल्यों एवं मान्यताओं में परिवर्तन के साथ-साथ विद्रोह भावना के लिए अभिव्यक्ति मिली है। वातावरण, सृष्टि की प्रधानता पात्रों के नाम, वर्गों का सामान्यतया लोप आदि का चित्रण है।

अकहानी में जीवन के सहज संदर्भ और संवेदनाओं को कथा के बिना प्रस्तुत कर दिया जाता है।

सचेतन कहानी - सचेचन कहानी नयी कहानी का विकसित रूप है। सचेतनता का अर्थ है कि लेखक अपने चारों तरफ़ के अंतर्विरोधों और जटितलाओं को भोगता हुआ या अनुभव करता हुआ लिखे। महीपसिंह ने सचेतन कहानी की सचेतनता को जीवन जीने और जानने की दृष्टि कहा है।

आम आदमी की कहानी ने जिस अमानुषीकरण की समस्या को लिया है, उसका अर्थ है कि व्यक्ति को अमानुष्य बना दिया गया है, अतः वह परिस्थितियों के कारण मनुष्य नहीं रह गया है।

समांतर कहानी - इसमें आम आदमी की ज़िंदगी को समानांतर रूप में रख गया है।

जीवन की गहराई में जाकर ईमानदारी से उसकी सच्चाइयों को परखने का सफल प्रयास हिंदी के कहानीकारों ने किया है।

मानवीय मूल्य एवं लोकचेतना - मनुष्य स्वभाव से जानने की इच्छा रखता है और जिज्ञासापूर्ण प्राणी है। उसे किसी भी प्रकार से समझाया जा सकता है, जताया जा सकता है कि क्या सही है और क्या गलत है; किंतु पहले से निर्मित चीज़ों और विषयों में परिवर्तन लाना बड़ा मुश्किल है। चेतना देना या किसी भी स्थिति से अवगत कराया जा सकता है, मगर अंततः मन उस बात को कितना मानता और स्वीकार करता है, यह एक विशेष बात है। कभी-कभी संस्कारों की बात महत्वपूर्ण होती है, जो जिस माहौल में रहता है, वह उसी प्रकार के विचार रखता है। मनुष्य, मनुष्य के लिए मरे या उसके हित के लिए काम करे यही महत्त्वपूर्ण बात है। जियो और जीने दो। मनुष्य में मूल्यगत विचारधारा को लाना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मानवीय मूल्यों की पहचान करना और लोक चेतना को जागृत करना आज के संदर्भ में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इसके सदर्भ में हम कुल तीन कहानियों को उदाहरण के तौर पर लेंगे और देखेंगे कि वास्तव में मानव किस हद तक अपने आपको गिरा सकता है और स्वार्थवश क्या-क्या करता चला जाता है– 1. चीफ़ की दावत – श्री भीष्म साहनी, 2. एक भिखारी का दान – श्री राजवेलू, 3. बूढ़ी काकी – श्री प्रेमचंद।

चीफ़ की दावत : माँ अशिक्षित, भोली-भाली, पुराने विचारो की स्त्री है। वह अशिक्षित है पर अपने मातृत्व के कर्तव्य का निर्वाह ईमानदारी से करती है। बेटा नौकरी में तरक्की पाने के लिए तरह-तरह के ढोंग रचता है। खून का रिश्ता होने के बावज़ूद बेटा अपने स्वार्थ के लिए, प्रगति के लिए अपनी खुशी के लिए अपनी माँ तक को छोड़ता नहीं। मगर माँ कितनी भी

परेशान क्यों न हो अंत में बेटे की खुशी के लिए अपनी खुशी की परवाह नहीं करती।

इज़्ज़त, मर्यादा, अहम, दिखावा, बढ़प्पन आदि कब कहाँ और किस हद तक सही है वह प्रमुख है। किसी को भी किस हद तक दबाया जा सकता है और किस तरह अपमानित किया जा सकता है वह ज़रूरी है।

एक भिखारी का दान : भिखारी कौन है, यह एक प्रश्न चिन्ह है? पैसे से आदमी भिखारी होता है या दिल से- आदमी स्वभावगत रूप से किसी का भला नहीं कर सकता। खुद की तकलीफ़, तकलीफ़ है और दूसरों की तकलीफ़ को तकलीफ़ मानने के लिए तैयार नहीं। रिक्शावाला, प्रोफ़ेसर और भिखारी – तीनों में भिखारी कौन है? समय आने पर रिक्शावाला उदार हृदय होकर प्रोफ़ेसर की सहायता करता मगर प्रोफ़ेसर प्रश्न कर पैसे देने में हिचकिचाता है। भिखारी तो भिखारी है ही।

बूढ़ी काकी : परिवार के बुजुर्गों के प्रति तिरस्कार भाव। संपत्ति अपने भतीजे के नाम कर देती है और भोजन के लिए तरसा दिया जाता है। संपत्ति लेने के लिए भर तैयार हैं किन्तु सेवा तो दूर। भोजन के लिए तक तरसाया जाता है। यहाँ तक कि वह झूठे पत्तलों में खाना बटोरती है। अंत में रूपा क्षमा प्रार्थी है और उस बूढ़ी काकी को अपने साथ रख लेती है।

इस प्रकार कहानियों के द्वारा हम मानव समुदाय को शिक्षित कर सुधार लाने का प्रयास कर सकते हैं। मानव चिंतन और मनन की आवश्यकता है। जब तक मानव यह सोचता नहीं है कि वह कहाँ तक सही है सुधार लाना मुश्किल है। स्वयं चिंतन करना है, खुद जानना है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. चीफ़ की दावत – भीष्म साहनी।
2. बूढ़ी काकी – प्रेमचंद
3. एक भिखारी का दान – राजवेलू
4. बीसवीं सदी का हिंदी साहित्य – डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ – नई दिल्ली-110003.
5. हिंदी साहित्य का इतिहास – गुलाबराय

D-204, Santham Apts, Rukkammal Colony, Thudialur, Coimbatore – 641 034.

नाम परिवर्तन

प्रमाण-पत्र या उपाधि पत्रों में नाम परिवर्तन के लिए आवेदन-पत्र भेजते समय निम्न कागज़ात अवश्य भेजना चाहिए –

1. मूल प्रमाण-पत्र और मूल अंक-सूची कार्ड
2. Notary द्वारा Affidavit या Government Gazette की साक्षीकृत (Attested) प्रतिलिपि
3. प्रवेशिका के प्रमाण-पत्र की साक्षीकृत (Attested) प्रतिलिपि (विशारद में नाम परिवर्तन के समय)
4. नाम परिवर्तन शुल्क (हर एक परीक्षा के लिए) प्रारंभिक ₹ 50/- उच्च ₹ 250/-

— परीक्षा सचिव